

दिव्य हिमाचल (मेरा कांगड़ा), 31 मई 2017, पृष्ठ IV

स्टीविया की खेती पर आकर्षित

उन्नत कृषि प्रौद्योगिकी को भूटान के प्रतिनिधिमंडल ने किया आईएचबीटी का दौरा

■ कार्यालय संचालक, पालमपुर

भूटान सरकार के कृषि मंत्रालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने पालमपुर स्थित हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान की कृषि प्रौद्योगिकी एवं किसानों तक उनकी पहुंच को जानने के लिए आईएचबीटी का दौरा किया। संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने कहा कि पालमपुर और भूटान की जलवायु एवं भौगोलिक परिस्थितियां मिलती-जुलती हैं। अतः इस संस्थान द्वारा विकसित उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियां भूटान के किसानों की आमदनी बढ़ाने हेतु कारगर सिद्ध हो सकती हैं। संस्थान के प्रक्षेत्र भ्रमण के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने मशीनों द्वारा चाय बागान प्रबंधन प्रक्रिया, आधुनिक



पुष्प फसलें जैसे जरबेरा, कैला लिलि, गेंदे, बर्ड ऑफ पैराडाइज और गुलाब व उनकी नवीनतम किस्में, तथा औषधीय, सगंध पौधों की खेती एवं फसलोपरांत उनका प्रबंधन, विशेषकर जैवसक्रिय यौगिकों के निष्कर्षण किया। वहीं स्टीविया की खेती ने उन्हें बहुत आकर्षित किया। प्रतिनिधिमंडल के सदस्य उच्च गुणवत्ता युक्त फसलों को तैयार करने हेतु हाइड्रोपोनिक्स और एरोपोनिक्स विधि से बहुत

प्रभावित हुए। एक अन्य वरिष्ठ सदस्य लोबजंग ने कहा कि वे अपने मंत्रालय से इस संस्थान के साथ परस्पर शोध कार्य करने हेतु आग्रह करेंगे। इस दौरे को आयोजित करने वाले इंडन होटिकल्चर सर्विस के अधिकारी डा. अखिलेश कुमार ने कहा कि हर्बल औषध और पुष्पखेती के क्षेत्र में इच्छुक लोगों के लिए आईएचबीटी अच्छा उद्यमिता केंद्र साबित हो सकता है।

Union Ministry to launch 'Deep Ocean Mission'

CSIR-NIO

31st May 2017

Panaji: The Union Ministry of Earth Sciences (MoES) is all set to launch 'Deep Ocean Mission' by January 2018, which is expected to improve India's position in ocean research field, M Rajeevan, Secretary, MoES said here on Tuesday.

Mr. Rajeevan, who is also chairman of the Polymetallic Nodules Assessment Committee was addressing a workshop on 'Three decades of India acquiring Pioneer Investor Status — Achievements and way forward' at the CSIR-National Institute of Oceanography(NIO). The program on poly metallic nodules was initiated at CSIR-NIO with the collection of the first nodule sample from Arabian Sea on board the first research vessel Gaveshani on January 26,1981. India was the first country in the world to have been given the pioneer area for exploration of deep-sea mineral, namely, polymetallic nodules in the Central Indian Ocean Basin in 1987.

“This was based on the extensive surveys carried out by the scientists of CSIR-NIO, on several research ships leading to the allocation of an area of 150,000 sq km to the country with exclusive rights under the UN Law of the sea. Subsequently, environment impact assessment (EIA) studies for nodule mining by CSIR-NIO, development of metal extraction process by CSIR-National Metallurgical Laboratory, Jamshedpur, and CSIR-Institute for Minerals and Metals Technology, Bhubaneswar, and development of mining technology by National Institute of Ocean Technology (NIOT), Chennai, have been taken up under the national program on polymetallic nodules funded by MoES”, said NIO Director VSN Murthy.

Based on the resource evaluation, India has now retained an area of 75,000 sq km with an estimated resource of about 100 million tons of strategic metals such copper, nickel, cobalt besides manganese and iron.

A FGM (First Generation Mine-site) with an area of 18,000 sq km has been identified. Latest technologies for extraction of metals from the minerals have also been developed.

“We have done EIA. We have done basic experiments on pilot scale since 1997. For economic exploration, the NIOT, Chennai is getting ready with the technology and they may start with mining in next five years,” Mr. Murthy told *The Hindu*.

He said that besides identifying the mineral resource and developing technologies for mining and extraction, the programme has also resulted in high impact research as well as manpower development. Detailed environmental data has been collected for compliance with International Seabed Authorities requirements. This is required as the mining activity on large scale should not adversely affect the coast of other countries in the neighbourhood

Published in:

Thehindu.com

CSIO, IIT-Ropar sign MoU for advancement in science and technology

CSIR-CSIO

31st May 2017



The Central Scientific Instruments Organisation (CSIO) and Indian Institute of Technology Ropar (IIT Ropar) have entered into a Memorandum of Understanding (MoU) for academics and advancement in science and technology. The MoU will facilitate exchange of staff and students towards co-supervision of undergraduate, postgraduate and PhD theses, participation in research thus promoting

interaction among the scientists, professors and research scholars of both the organisations. Further this will help in pursuing joint research programmes including externally funded schemes and consultancy activities. Scope of MoU also involves sharing of expertise, domain knowledge and available facilities in mutually agreed research areas for research and development. The areas include physics, photonics, optics, chemistry, biomedical, material science and engineering, nanoscience and nanotechnology, electronics, computation, mechanical engineering and any other areas of common interest in science and engineering. R K Sinha, director CSIR-CSIO and Sarit K Das, IIT-Ropar director signed the MoU. Senior officials from both the organisations were also present.

Published in:

Indianexpress.com

CDRI: हर साल 10 वयस्को की जान ले रहा है तम्बाकू

CSIR-CDRI

CDRI: हर साल 10 वयस्कों की जान ले रहा है तम्बाकू

1st June 2017

Updated: 2017-05-31 18:17:20 IST



सीडीआरआई में विश्व तम्बाकू दिवस के मौके पर केजीएमयू के पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट के सहयोग से विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर जागरूकता और ओरल हेल्थ चेकअप कार्यक्रम का आयोजन हुआ

लखनऊ.सीडीआरआई में विश्व तम्बाकू दिवस के मौके पर केजीएमयू के पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट के सहयोग से विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर जागरूकता और ओरल हेल्थ चेकअप कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस मौके पर सीडीआरआई की निदेशक मधु दीक्षित और मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर ने तम्बाकू खाने से होने वाले शारीरिक हानि के बारे में बताया।

सीडीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ असीम घटक ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा विश्व तम्बाकू निषेध दिवस मनाने की आवश्यकता के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा

तम्बाकू एवं तम्बाकू उत्पादों पर नियंत्रण करना सिर्फ सरकार तक ही सीमित नहीं है इसके लिए व्यक्तिगत स्तर पर भागीदारी के माध्यम से ही एक तम्बाकू मुक्त विश्व की कल्पना की जा सकती है। लोगों को संकल्प लेना चाहिए की वे स्वयं तम्बाकू का सेवन नहीं करेंगे और अन्य लोगों को भी इनके उपयोग से इस से बचने के लिए प्रेरित करेंगे जिससे वे मुख के कैंसर, उच्च रक्तचाप, हार्ट अटैक एवं स्ट्रोक जैसे बीमारियों को होने से बचा सकें।



समारोह के दौरान सुबह केजीएमयू लखनऊ के डॉ एसके सोनकर ने तंबाकू एवं स्वास्थ्य विषय पर एक व्याख्यान दिया तथा तंबाकू के उपयोग संबंधी अनेक चौंकाने वाले तथ्य प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा, दुनिया में 15 वर्ष से अधिक आयु के लगभग 21% लोग तंबाकू का सेवन करते हैं। प्रतिवर्ष दस वयस्कों में से एक की जान तंबाकू के सेवन की वजह से जा रही है। भारत में भी 34% ग्रामीण एवं 28% शहरी पुरुष तंबाकू एवं तंबाकू उत्पादों का सेवन करते हैं। लगभग 7 मिलियन लोग दुनिया भर में प्रति वर्ष तंबाकू सेवन की वजह से असमय मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। ये तंबाकू के विरुद्ध खड़े होने का सही समय है अन्यथा वर्ष 2030 तक दुनिया भर में तंबाकू की वजह से असमय मृत्यु की दर 8 मिलियन प्रतिवर्ष हो जाएगी।

इसके पश्चात, केजीएमयू के पब्लिक हेल्थ डेंटिस्ट्री डिपार्टमेंट के डॉ गौरव मिश्रा ने तंबाकू के उपयोग से बचने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा की तंबाकू का सेवन गरीब तबके में अधिक देखा गया है जो उनकी गरीबी का भी एक मुख्य कारण बनता जा रहा है। तंबाकू पर होने वाले खर्च की जगह वो उस धन का उपयोग अच्छे स्वास्थ्य, अच्छी शिक्षा एवं मूलभूत सुविधाओं पर कर सकते हैं।

सीडीआरआई की निदेशक डॉ मधु दीक्षित ने सभी वक्ताओं के सारगर्भित व्याख्यानों के लिए बधाई दी एवं डॉ गौरव मिश्रा को ओरल हेल्थ चेकअप कैंप के आयोजन के उनके प्रयासों के लिए भी धन्यवाद दिया।

उन्होंने युवाओं में बढ़ते हुये तंबाकू सेवन के प्रति चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा जैसा की इस वर्ष के विश्व तंबाकू निषेध दिवस की थीम है, वास्तव में तंबाकू विकास के मार्ग में एक बहुत बड़ी बाधा है, तंबाकू न सिर्फ हमारे स्वास्थ्य को छीनता है बल्कि वो हमारे पर्यावरण हमारी अर्थव्यवस्था बिगाड़ने के अलावा हमारी ज़िंदगियों से भी बहुत कुछ छीन सकता है।

दोपहर में डॉ गौरव मिश्रा के नेतृत्व में केजीएमयू के पब्लिक हेल्थ डेंटिस्ट्री डिपार्टमेंट के रेजीडेंट डॉक्टरों की टीम ने ओरल हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया जिसमें 200 से अधिक लोगों ने भाग लिया। पिछले वर्ष आयोजित कैंप के प्रतभागियों का फोलोअप चेक अप भी किया गया।

Published in:

Patrika.com